Sikkim University

Chronicle

सिक्किम विश्वविद्यालय
स्थापित -२००७

खंड V, अंक II | जून 2017 | www.cus.ac.in

संपादक की कलम से

मई के महीने में व्यस्तता काफी रही और सेमेस्टर के समाप्त होने में एक महीना ही बचा था , बहुत से विभाग महत्वपूर्ण कार्यक्रमों के साथ काफी व्यस्त रहे। इस अंक में उन पर कुछ रिपोर्ट हैं।

किसी भी संस्था का अतिथि गृह उसकी छवि के लिए महत्वपूर्ण है और सी.बी. छेत्री ने इस बिंदु को वर्षों के दौरान विश्वविद्यालय के अतिथि गृह के विकास पर अपने लेख में हाइलाइट किया है। संतोष राई हमें हरियाली गली में ले जाते हैं क्योंकि वह पर्यावरण जागरूकता टीम का हिस्सा होने के अपने अनुभवों और इस तरह की परियोजना की सफलता के लिए वसीयतनामा के रूप में हरे भरे पेड़ों की वृद्धि को याद करते हैं।

शिक्षा विभाग गर्व से अपनी पहले एम.फिल डिग्री प्राप्तकर्ताओं की घोषणा करता है और संपादकीय टीम उन्हें उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं देती हैं।

अगले अंक तक, आप सब ठीक रहें!

जैस्मीन यिमंचुंगर

इस अंक में. . .

⇒ संपादक की कलम से – पेज 1
⇒ सिक्किम कंसल्टेंसी सेंटर के सहयोग से कंप्यूटर अनुप्रयोग विभाग द्वारा आयोजित TEDP – पेज 1
⇒ पर्यावरण जागरूकता कार्यक्रम के साथ संतोष राई की कोशिश – पेज 2
⇒ उद्यानिकी विभाग की सरकारी मशरूम खेती केंद्र, माजीतार, और सरकारी रेशम उत्पादन केंद्र, ममरींग, पूर्वी सिक्किम की यात्रा – पेज 3
⇒ हिंदी विभाग वार्ता – पेज 3
⇒ एमफिल डिग्री प्राप्तकर्ता, शिक्षा विभाग – पेज 3
⇒ क्षेत्र सर्वेक्षण और तकनीकों पर अभिविन्यास-सह-कार्यशाला – पेज 4
⇒ विश्वविद्यालय के अतिथि गृह पर सीबी छेत्री का लेख – पेज 5

ईमेल पता

suchronicle@cus.ac.in
jyimchunger@cus.ac.in

सिक्किम कंसल्टेंसी सेंटर (सिकॉन) के सहयोग से कंप्यूटर एप्लीकेशन विभाग द्वारा आयोजित प्रौद्योगिकी आधारित उद्यमशीलता विकास कार्यक्रम (टीईडीपी) : के संबंध में

सिक्किम कंसल्टेंसी सेंटर (सिकॉन) के सहयोग से सिक्किम विश्वविद्यालय के कंप्यूटर अनुप्रयोग विभाग ने 31 मार्च, 2017 से 24 मई 2017 तक एक छह सप्ताह के लंबे समय तक प्रौद्योगिकी आधारित उद्यमिता विकास कार्यक्रम (टीईडीपी) का सफलतापूर्वक आयोजन किया। कार्यक्रम विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार द्वारा वित्त पोषित किया गया

कार्यक्रम का उद्घाटन 31 मार्च 2017 को संयुक्त कुलसचिव डॉ एसके गुरुंग ने किया था। उद्घाटन कार्यक्रम में डॉ. एस एस महापात्रा, एसोसिएट प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग, डॉ. बी के आचार्य, सहायक प्रोफेसर, जूलॉजी विभाग, सीकॉन से श्री एच.के. मंडल, संकाय सदस्य और प्रतिभागी शामिल थे।

उन्मुखीकरण कार्यक्रम का मकसद विभिन्न क्षेत्रों के बारे में जागरुकता पैदा करना था जो एक उद्यमी में एक व्यक्ति को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। सत्रों को बैंकिंग और वित्त, वैज्ञानिक संगठनों के प्रतिनिधियों, शिक्षाविदों और स्थानीय उद्यमियों द्वारा संबोधित किया गया। निम्नलिखित वक्ताओं को अपनी विशेषज्ञता और अनुभव साझा करने के लिए आमंत्रित किया गया। पीटी शेरपा, सेवानिवृत्त एजीएम (एसबीआई), श्री एसआर करेत्रा , एडी (एमएसएमई), श्रीडी। बेसनेट , स्थानीय उद्यमी, डा जे उपाध्याय, सहायक प्रोफेसर, सिक्किम गवर्नमेंट कॉलेज, डॉ एसएस महापात्र , एसोसिएट प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग, श्री बी मुथुपांडियन, सहायक प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग, डा पी.के. दास, सहायक प्रोफेसर, प्रबंधन विभाग, डॉ. एस तामांग, सहायक प्रोफेसर, रसायन विज्ञान विभाग, सुश्री एम ठाकुरी , सहायक प्रोफेसर, एसआरएम, श्रीमती सी खावास, सहायक प्रोफेसर, कंप्यूटर अनुप्रयोग विभाग और डॉ. एमपी प्रधान, एसोसिएट प्रोफेसर, कंप्यूटर एप्लीकेशन विभाग।

ब्रह्मा कुमारीज़ के प्रतिनिधियों द्वारा सकारात्मक सोच पर एक विशेष सत्र भी आयोजित किया गया।

श्री टीके कौल , कुलसचिव सिक्किम यूनिवर्सिटी ने समापन सत्र की शोभा बढ़ाई । उन्होंने प्रतिभागियों को कार्यक्रम के महत्व को बताया/0} और प्रतिभागियों को एक सक्षम और सफल उद्यमी बनने के लिए प्राप्त कौशल का उपयोग करने के लिए प्रेरित किया।

सिक्किम विश्वविद्यालय द्वारा पर्यावरण जागृति कार्यक्रम

2009 के वसंत में, मैं सिक्किम विश्वविद्यालय से जुड़ा। मेरा पहला काम उद्यानिकी और पुष्प कृषि प्रबंधन विभाग का मसौदा पाठ्यक्रम तैयार करना था। सीमित मानव शक्ति के कारण दोनों शिक्षण और गैर-शिक्षण कर्मचारी मानव स्वचालन के रूप में अथक काम करते थे। हम काम की प्रगति पर रिपोर्ट करने के लिए कंचन्जंघा प्रशासनिक ब्लॉक में इकट्ठा होते और देर शाम या कभी-कभी आधी रात को भी घर जाते थे। लंबे काम के घंटे के इस अभ्यास ने हमें कार्यस्थल में ही सीमित कर दिया। एक अच्छी सुबह, मैं रिसेप्शनिस्ट के डेस्क पर स्थानीय समाचार पत्रों को जल्दी-जल्दी पलट रहा था। मैंने सिक्किम में पर्यावरण जागरूकता कार्यक्रम को आयोजित करने जिसमे योजना के तहत चयनित प्रस्तावों को राष्ट्रीय पर्यावरण जागरूकता अभियान के अंतर्गत वित्तीय सहायता प्रदान की जानी थी। उस समय के दौरान, मुझे विश्वविद्यालय के मूल्यांकन अनुभाग में तैनात किया गया था।

विश्वविद्यालय प्राधिकारी से पूर्व अनुमति के साथ, मैंने अनुदान के लिए आवेदन किया और हमारे प्रस्ताव का चयन किया गया। अनुदान की पहली किस्त प्राप्त करने के बाद हमने 3 जुलाई 2010 को पूर्वी सिकम के सवाली गांव में एक पर्यावरण जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया और कार्यक्रम स्थल सामुदायिक हॉल, चुवंतर था। कार्यक्रम का विषय जलवायु परिवर्तन था। हम एक स्थानीय गैर सरकारी संगठन अजंभरी संस्थान के सदस्यों के साथ संपर्क में थे और श्रीमती मीरा थापा इस संगठन की अध्यक्ष थी।कार्यक्रम में, मैंने विश्वविद्यालय से संसाधन व्यक्तियों को जोड़ा और कार्यक्रम के उद्देश्यों का उल्लेख करते हुए इस अवसर को संबोधित किया। सुश्री कल्पना दहल छेत्री , अनुभाग अधिकारी ने जलवायु परिवर्तन और जैव विविधता पर इसके प्रभाव पर एक व्याख्यान दिया। उन्होंने सिक्किम हिमालयी रोडोडेंड्रन की लोक कथा और जलवायु परिवर्तन के आज के युग में इसके महत्व का भी वर्णन किया। ज्यादातर स्थानीय गांवों से भाग लेने वालों को उस लोककथा के बारे में जानकारी नहीं थी। डॉ. बिनू सुंदरस , पूर्व सहायक प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग ने संक्रमणशील बिमारियों के वैक्टर और जलवायु परिवर्तन का मानव स्वास्थ्य पर प्रभाव के बारे में बताया। उनके व्याख्यान ने प्रतिभागियों में बहुत जिज्ञासा पैदा की और कार्यक्रम लगभग एक स्वास्थ्य शिविर बन गया। अंत में सुश्री नैन्सी चोडेन ल्हासुंग्पा , पूर्व कार्यालय सहायक ने नागरिक भावना और अपशिष्ट प्रबंधन पर संक्षिप्त बात की। कार्यक्रम को प्रतिभागियों के बीच बातचीत और भूस्खलन प्रवण क्षेत्रों के पास और पीने के पानी के स्रोतों के पास स्थानीय रूप से उपलब्ध वृक्ष प्रजातियों के रोपण के साथ समापन किया गया। सिक्किम सरकार के वन विभाग की नर्सरी द्वारा स्थानीय वृक्ष प्रजातियों के पौधे प्रदान किए गए थे।

वर्ष 2011 में, मैंने फिर से सिक्किम में पर्यावरण जागरूकता कार्यक्रम के संगठन के बारे में विज्ञापन के जवाब में प्रस्ताव प्रस्तुत किया और हमारे प्रस्ताव को वित्तीय सहायता के लिए स्वीकार किया गया। 10 जुलाई 2011 को, हमने पूर्व सिक्किम के अहो-यांग्टाम गांव में 'जैव विविधता संरक्षण' विषय पर पर्यावरण जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया। इस बार यूनिवर्सिटी के संसाधन व्यक्तियों में से एक श्री विवेक मोक्तान, सिस्टम एनालिस्ट ने नागरिक भावना और अपशिष्ट प्रबंधन पर पावर प्वाइंट प्रस्तुति की मदद से एक व्याख्यान दिया, जिसके बाद नागरिक भावना पर आधारित लघु वृत्तचित्र फिल्म दिखाई गई, श्री निषाद सुब्बा, सहायक, सिस्टम मैनेजमेंट ने जैव विविधता संरक्षण अधिनियम 1 99 8 के बारे में बात की, जिसमें उसके आधार पर एक लघु वृत्तचित्र फिल्म के बाद पावर प्वाइंट प्रेजेंटेशन शामिल थी। विधि विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ. वीर मयाक ने पर्यावरण कानून के बारे में एक छोटी बात की। अधिकतर लोग गांवों और हाई स्कूल के छात्रों में से थे, वे अपने गांव में इस तरह के कार्यक्रम के आयोजन में सिक्किम विश्वविद्यालय की भागीदारी से खुश थे।

दोपहर के भोजन के ब्रेक के दौरान, संसाधन व्यक्ति सहित सभी प्रतिभागियों को इस्तेमाल किए गए पेपर प्लेट और कप के निपटान में बहुत सतर्कता थी क्योंकि पावर प्वाइंट प्रस्तुति का एक बहुत बड़ा असर और नागरिक भावना और अपशिष्ट प्रबंधन पर लघु दस्तावेजी फिल्म थी। पास के इलाकों में स्थानीय वृक्ष प्रजातियों के रोपण द्वारा कार्यक्रम संपन्न हुआ।

वर्ष 2013 में, मुझे पुराने 'स्कूल ऑफ पॉलिसी प्लानिंग एंड स्टडीज' में पोस्ट किया गया। मुझे विश्वविद्यालय छात्र के पर्यावरण क्लब के संकाय सलाहकार के रूप में नामित किया गया। पिछले वर्ष की तरह/0} विश्वविद्यालय कर्मचारियों और छात्रों के लिए पर्यावरण जागरूकता कार्यक्रम के आयोजन के सम्बन्ध में पर्यावरण, वन और वन्यजीव प्रबंधन विभाग, सिक्किम सरकार को वित्तीय सहायता के लिए एक प्रस्ताव प्रस्तुत किया। सूक्ष्म जीव विज्ञान विभाग की छात्रा मिस स्वास्तिका गुरुंग विश्वविद्यालय में पर्यावरण क्लब के लिए उत्साहित थीं।25 मई 2013 को, हमने 5 माईल के राप ज्योर-कौवेरी गर्ल्स हॉस्टल में जैव विविधता संरक्षण पर जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया और मुझे संकाय सलाहकार के रूप में नियुक्त किया गया। जीव विज्ञान विभाग की सहायक प्रोफेसर डॉ. बसुन्धर छेत्री ने सिक्किम की जैव विविधता और संरक्षण के लिए इसका महत्व पर एक व्याख्यान दिया। उन्होंने सिक्किम की महत्वपूर्ण जैविक प्रजातियों को उजागर किया, जिन्हें संरक्षण की आवश्यकता है। डॉ. बिनू सुंदास , पूर्व सहायक प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग ने 'एचआईवी और एड्स और जिम्मेदार नागरिकों की भूमिका' पर एक व्याख्यान दिया। सुश्री कल्पना दहल छेत्री , अनुभाग अधिकारी ने 'रहने की जगहों पर नागरिक भावनाओं और अपशिष्ट प्रबंधन के लिए नागरिकों की भूमिका' पर व्याख्यान दिया। छात्रावास के नीचे अप्रयुक्त भूमि में कुछ स्थानीय वृक्ष प्रजातियों के रोपण द्वारा कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

अब भी मैं इन गांवों की यात्रा करता हूं और उन जगहों को देखता हूँ जहाँ हमने पेड़ लगाए गए थे। उनकी उपस्थिति और तेज विकास से मुझे बहुत खुशी मिलती है और उनकी ऊंचाई सिक्किम विश्वविद्यालय के साथ मेरे संबंध को इंगित करती है।

संतोष कुमार राई

सहायक प्रोफेसर, बॉटनी विभाग

उद्यानिकी विभाग द्वारा सरकारी मशरूम खेती केंद्र, माजितार और सरकारी रेशम उत्पादन केंद्र, ममरींग, पूर्वी सिक्किम की यात्रा

बीएससी, उद्यानिकी विभाग के छठे सेमेस्टर छात्र डॉ. सुजाता उपाध्याय, पाठ्यक्रम प्रशिक्षक और श्री बहादुर सिंह बामियाया, अतिथि संकाय के साथ 29 मई, 2017 को सरकारी मशरूम खेती केंद्र, माजितार और सरकारी रेशम उत्पादन केंद्र, ममरींग, पूर्वी सिक्किम की यात्रा पर गए। सरकारी मशरूम खेती केंद्र पर श्री योगेश, एचडीओ ने मशरूम की खेती की मूल बातें की, जैसे कि बटन मशरूम, कस्तूरी मशरूम, दूधिया मशरूम और पैडी स्ट्रॉ मशरूम। मशरूम की खेती से संबंधित उपकरणों का भी प्रदर्शन किया गया। छात्रों ने कंपोस्ट पेस्ट्युराइजेशन और स्पॉन बैग की तैयारी पर व्यावहारिक प्रदर्शन किया। विज़िटिंग टीम द्वारा पास के उद्यानिकी खेत की यात्रा भी की गई। सरकारी में सेरीकल्चर सेंटर पर /0} नंद बहादुर छेत्री, फील्ड पर्यवेक्षक ने शहतूत रेशम, मुगा रेशम और एरी रेशम की खेती की मूल बातें पर निर्देशित किया और इलाके में कतरनों और रेशम कीड़ा के माध्यम से शहतूत के प्रसार को भी दिखाया। यह यात्रा छात्रों के लिए बहुत अधिक जानकारीपूर्ण और उपयोगी थी क्योंकि मशरूम की खेती और रेशम उत्पादन दोनों में स्व-रोज़गार के अवसर पैदा करने की बहुत बड़ी क्षमता है।

सरकारी रेशम उत्पादन केंद्र, ममरींग, पूर्वी सिक्किम में शहतूत रेशम कोकून

श्री योगेश, एचडीओ मशरूम की खेती पर उद्यानिकी के छात्रों की सैद्धांतिक कक्षा हुए

सिक्किम विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग ने 5 मई को विभागीय चर्चा का आयोजन किया। सत्र के वक्ता प्रोफेसर हरीश कुमार शर्मा, डीन, भाषा और साहित्य विद्यापीठ, राजीव गांधी विश्वविद्यालय, इटानगर और प्रोफेसर एस.एम. इकबाल, आंध्र विश्वविद्यालय, विशाखापत्तनम थे।

प्रो शर्मा ने "हिंदी साहित्य का भक्तिकाल" के बारे में बात की। उन्होंने विषय को वर्तमान परिदृश्य से जोड़ा और छात्रों को इसकी प्रासंगिकता के बारे में बताया। उन्होंने हिंदी भक्तिकालिन साहित्य के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और ऐतिहासिक पहलुओं पर भी विस्तार से बताया।

प्रोफेसर इकबाल ने " भाषा विज्ञान " के बारे में बात करते हुए मुख्यतः हिंदी भाषा और भाषाविज्ञान की प्रकृति पर ध्यान केंद्रित किया। उन्होंने आगे इस क्षेत्र में अनुसंधान के महत्व को प्रस्तुत किया।

इस कार्यक्रम ने विभाग के छात्रों को इन क्षेत्रों को ठीक से समझने में मदद की है जिसके कारण उन्हें काफी लाभ हुआ है।

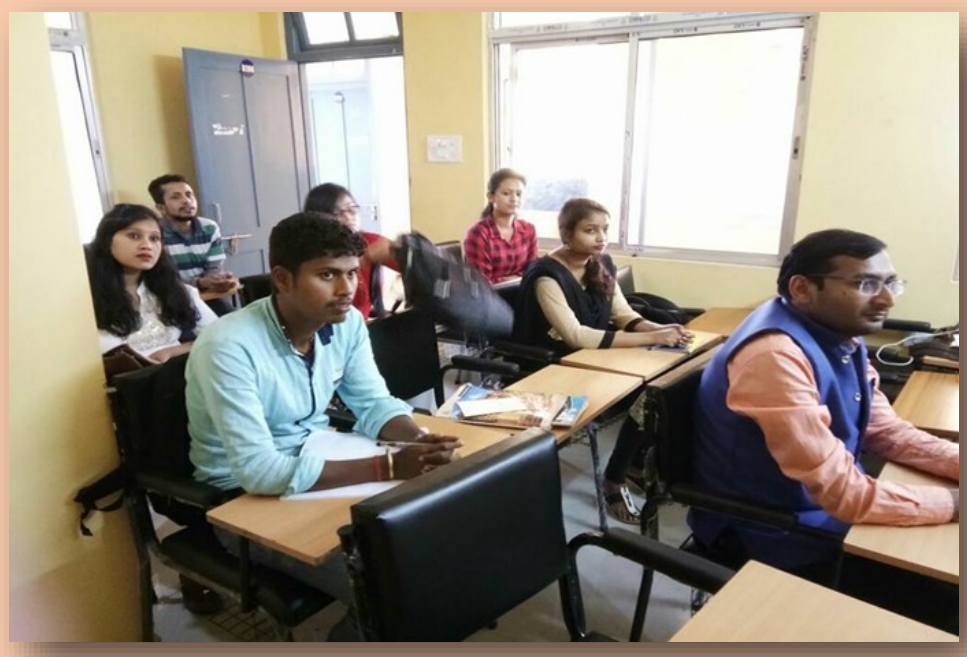

दिनेश साहू, प्रमुख, हिंदी विभाग द्वारा रिपोर्ट

---

26 अप्रैल, 2017 को तीन विद्वानों, श्री.अनुपम पॉकेल, सुश्री प्रिसिला घिमेरे और श्री नबीन मंगर को शिक्षा विभाग की से पहली एमफिल डिग्रियां मिली।

श्री.अनुपम पोखरेल ने डा सुभाष मिश्रा के पर्यवेक्षण में, श्रीमती प्रोमिला घिमिरे ने डॉ.अन्जू वर्मा के पर्यवेक्षण में और श्री नबीन मंगर डॉ. विमल किशोर मार्गदर्शन के तहत पूरा किया।

तीनों एमफिल डिग्री धारक अपने पर्यवेक्षकों के पीछे खड़े हैं

क्षेत्र सर्वेक्षण और तकनीकों पर अभिविन्यास कार्यक्रम सह कार्यशाला

लुप्तप्राय भाषा केंद्र, सिक्किम विश्वविद्यालय (अब से, सीईएल-एसयू) ने 24 अक्टूबर से 28 अप्रैल, 2017तक बाराद सदन, गंगटोक , सिक्किम विश्वविद्यालय में "फील्ड सर्वे एंड टेक्निक्स पर अभिविन्यास कार्यक्रम सह कार्यशाला" आयोजित की। कार्यशाला के लिए संसाधन व्यक्ति के रूप में प्रो अनविता अब्बी. प्रो केवी सुब्बाराव, डॉ राजेश खतिवाड़ा, डॉ तनमय भट्टाचार्य और श्री सुजोय सरकार को आमंत्रित किया गया। कार्यशाला का उद्देश्य आम तौर पर क्षेत्रीय कार्यकर्ताओं के लिए अकादमिक उन्मुखीकरण प्रदान करना था जो भाषाई क्षेत्रीय कार्यों पर विशेष ध्यान देने के साथ क्षेत्रीय कार्य (क्या करें और क्या न करें के बारे में जाने के बारे में था। विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के परास्नातक और पीएचडी शोधार्थियों के साथ लगभग 32 प्रतिभागियों ने कार्यशाला में भाग लिया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता सिक्किम विश्वविद्यालय के कुलपति, प्रोफेसर टीबी सुब्बा ने की। डॉ. समर सिन्हा, समन्वयक, लुप्तप्राय भाषा केंद्र (सीईएल) द्वारा स्वागत भाषण के साथ कार्यक्रम शुरू हुआ।

संसाधन व्यक्तियों के साथ सिक्किम विश्वविद्यालय के कुलपति, प्रोफेसर टीबी सुब्बा ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की।

तकनीकी सत्र प्रो अब्बी द्वारा शुरू किया गया जिसमे उन्होंने भारतीय भाषाई स्थितियों पर प्रकाश डाला और विशेषकर उत्तर-पूर्व भारत में लुप्तप्राय भाषाओं पर काम करते समय क्षेत्र के विभिन्न आंतरिक और बाहरी चुनौतियों के बारे में बताया। उन्होंने विभिन्न लुप्तप्राय भाषाओं विशेष रूप से महान अंडमानी के दस्तावेजीकरण के अपने अनुभव के बारे में बार-बार संदर्भ दिया और उन्होंने एलिटेशन तकनीकों के साथ बहुभाषी शब्दकोशों को तैयार करने और डेटा एलिसीटेशन के बारे में जानकारी देने पर ध्यान देने योग्य जानकारी पर ध्यान केंद्रित किया।

प्रोफेसर केवी सुब्बाराव ने भाषाओं के वाक्यविन्यास विश्लेषण के बारे में अंतर्क्रियात्मक परिचय दिया। कार्यशाला के प्रतिभागियों की भाषाओं से डेटा को प्राप्त करते हुए उन्होंने विशेष रूप से उन विशेषताओं पर चर्चा की जो तिब्बती-बर्मन भाषाओं के लिए विशिष्ट हैं।

डॉ राजेश खतिवाड़ा के व्याख्यान में, प्रतिभागियों को भाषा के ध्वन्यात्मक और ध्वन्यात्मकता की जांच के लिए विचारों के साथ पेश किया गया। उनके एक व्याख्यान फोनेटिक ट्रांस्क्रिप्शन में इंटरनैशैक्टिव अभ्यास सत्र के साथ प्रतिलेखन प्रणालियां शुरू हुईं जो इंटरनैशनल फोनेटिक वर्णमाला (आईपीए) का इस्तेमाल करते हुए भाषाई आंकड़ों के प्रतिलेखन पर थीं। उन्होंने कलात्मक आंकड़ों को हासिल करने और रिकॉर्ड करने में उपयोग किए जाने वाले विभिन्न उपकरणों और तरीकों का भी वर्णन किया।

डा तनमॉय भट्टाचार्य ने क्षेत्रीय कार्यकर्ताओं से संबंधित विधियों का वर्णन किया। विज्ञान, सामाजिक विज्ञान और मानविकी के साथ एक अनुशासन के रूप में भाषाविज्ञान को स्थित करते हुए, उन्होंने भाषाई डेटा संग्रह में उपयोग की जाने वाली प्रश्नावली पद्धति के आलोचना करते हुए मानव भाषा का अध्ययन करने के तरीकों के बारे में बताया। अन्य बातों के अलावा, उन्होंने शिकागो स्कूल ऑफ सोशियोलॉजी, नेब एंडरसन के काम के बारे में बात की ; भाषाई आंकड़ों के मानव स्वभाव; और फील्डवर्क का आयोजन करते समय सहानुभूति की आवश्यकता होती है

डॉ राजेश खतिवाड़ा द्वारा ध्वन्यात्मक प्रतिलेखन पर व्याख्यान

श्री सुजॉय सरकार ने उत्तर बंगाल पर विशेष ध्यान देते हुएभारत के भाषाई परिदृश्य पर विस्तार से वर्णन किया। उन्होंने विभिन्न मापदंडों पर चर्चा की जो भाषाओं की जीवन शक्ति और खतरे का आकलन करने के लिए इस्तेमाल की गई थी, और प्रतिभागियों द्वारा बोली जाने वाली विभिन्न भाषाओं का मूल्यांकन करने के लिए यूनेस्को (2003) पैरामीटर का उपयोग करके कक्षा में एक ही वर्णन किया।

विशेषज्ञों के अलावा, श्री बलराम पांडे, नेपाली विभाग, सिक्किम यूनिवर्सिटी ने 'पीपल्स लिंगविस्टिक सर्वे ऑफ़ इंडिया (पीएलएसआई - सिक्किम चैप्टर) : नोइंग द लिंगविस्टिक सिनेरियो ऑफ़ सिक्किम' पर बात की। उन्होंने पीएलएसआई के लिए किए गए सिक्किम की भाषा के सर्वेक्षण और दस्तावेज़ीकरण के दौरान अपने अनुभवों के बारे में बात की।

सिक्किम विश्वविद्यालय के मानव विज्ञान विभाग से डॉ. करिश्मा कर्थक लेपचा ने लुप्तप्राय भाषाओं और पुनरोद्धार पर बात की। अपनी बात में, उन्होंने संस्कृति के लिए एक खिड़की के रूप में भाषा के अध्ययन में कुछ नृविज्ञानी दृष्टिकोण लगाए। उनकी बात ने मानवविज्ञान के अध्ययनों में मुद्दों पर और "समुदाय को वापस देने" के आधार / प्रस्ताव / विचार पर एक बहुत जीवंत चर्चा उत्पन्न की।

विदाई सत्र में, प्रतिभागियों ने आयोजकों और संसाधन व्यक्तियों के साथ कार्यशाला के नतीजे पर अपनी संतुष्टि व्यक्त करने वाली अपनी बहुमूल्य प्रतिक्रिया साझा की। सत्र के बाद प्रोफेसर अब्बी द्वारा प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र का वितरण किया गया और डॉ. समर सिन्हा, समन्वयक, सीईएल ने समापन टिप्पणी की। कार्यशाला उपयोगी और सफल रही।

प्रोफेसर अब्बी के साथ कार्यशाला का अंतिम दिन

विश्वविद्यालय का अतिथिगृह

ऐसा कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी कि किसी संस्था का अतिथि गृह उसका चेहरा होता है और उसके बारे में पहली छाप छोड़ता है। जिस तरीके से एक संगठन अपने गेस्टहाउस का रखरखाव करता है, वास्तव में अक्सर इससे उसके प्रबंधन के स्वास्थ्य और दक्षता का पता चलता है। एक विश्वविद्यालय जैसे उच्च शिक्षा की संस्था में, एक अतिथि गृह और आदर्श रूप से निभाई जाने वाली भूमिका की यह सराहना बहुत आसानी से समझ में आती है क्योंकि ऐसे संस्थान में नियमित रूप से दुनिया के विभिन्न स्थानों से मेहमानों का आगमन होता हैं।

भारत में, सरकारी अतिथि गृह आमतौर पर अच्छी तरह से केंद्रीय रूप से प्रासंगिक स्थानों पर बनाये जाते हैं लेकिन अक्सर उनका अपर्याप्त रखरखाव होता हैं। एक अतिथि घर का प्रबंधन आतिथ्य मामलों में उच्च स्तरीय कौशल की मांग करता है और आतिथ्य प्रबंधन से जुड़े कार्यों के विभिन्न पहलुओं को संभालने के लिए समर्पित जनशक्ति की एक टीम भी आवश्यक है। दुर्भाग्य से, विश्वविद्यालय के गेस्टहाउस अक्सर आदर्श रूप से प्राथमिकता और ध्यान नहीं प्राप्त करते। व्यावसायिक रूप से प्रबंधित होटल उद्योग के विपरीत, अपर्याप्त और अकुशल जनशक्ति के कारण अक्सर एक विश्वविद्यालय के अतिथि गृह में दी गई सेवाओं की गुणवत्ता पर समझौता करना पड़ता हैं। तथ्य यह है कि एक अच्छी तरह से बने अतिथि गृह में सेवा की गुणवत्ता और संरचना दोनों महत्वपूर्ण हैं।

अतिथि गृह के स्टैंडर्ड रूम

सिक्किम विश्वविद्यालय में, हमारे मूल्यवान मेहमानों को पेश करने के लिए हम सबसे अच्छी सेवाओं और सुविधाओं को उपलब्ध कराने का लगातार प्रयास कर रहे हैं। इस इच्छा को पूरा करने के लिए अपना अतिथिगृह चलाने के लिए 18 बेहतरीन कमरों वाली सुसज्जित किराए की संपत्ति का रखरखाव करता है। अतिथि गृह से दिखाई देने वाले गंगटोक शहर और पालजोर स्टेडियम का शानदार पैनोरमिक दृश्य वास्तव में तरोताज़ा कर देता है। एमजी मार्ग, गंगटोक का प्रमुख बाजार से 10 मिनट की पैदल दूरी पर स्थित, इस अतिथिगृह में 1 वीआईपी सूट, 2 सुपर डीलक्स रूम, 15 डीलक्स रूम हैं जो किसी भी समय 30 से ज्यादा मेहमानों को रख सकते हैं।पूरी इमारत वाई-फाई है और प्रत्येक कमरे में एलईडी टीवी, इंटरकॉम कनेक्टिविटी के अलावा अन्य बुनियादी सुविधाएँ जैसे कि अलमारी, रीडिंग टेबल और अन्य आवश्यक सामान सम्मानित मेहमान को आराम से रहने के लिए सुविधाजनक बनाते हैं। ग्राउंड फ्लोर पर डाइनिंग हॉल उपयुक्त, गर्म, स्वस्थ और स्वादिष्ट भोजन के साथ मेहमानों की सेवा के लिए सुसज्जित है। चौबीस घंटे तैनात सुरक्षा गार्डों के अतिरिक्त, पूरी इमारत सीसीटीवी निगरानी में है ताकि मेहमानों की सुरक्षा सुनिश्चित हो सके। इमारत में एक मानक लिफ्ट स्थापित है और एक भारी क्षमता वाला जनरेटर स्थापित किया गया है ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि बिजली जाने पर निवासियों के लिए परेशानी न हो।

मेहमानों के लिए मांग पर और मामूली दर पर खाना उपलब्ध कराया जा रहा है, इस तथ्य के बावजूद कि इसकी रसोई को केवल अपने मेहमानों से भोजन के लिए उत्पन्न राजस्व का उपयोग करते हुए चलाया जा रहा है। सुरक्षा कर्मचारी के अलावा केवल 1 रिसेप्शनिस्ट, 2 हाउसकीपिंग स्टाफ और एक रसोइए के साथ अपने मेहमान की अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए अतिथि गृह को कड़ी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, हालांकि अपने मेहमानों के लिए सर्वोत्तम सेवा के प्रयास में कोई कसर नहीं छोड़ी जाती। अतिथि गृह में आवास बुकिंग के मामलों में, अतिथि गृह मैनेजमेंट 'पहले आओ पहले पाओ' के सिद्धांत को अपनाता है और रुपये 1,000/ - प्रति रात प्रति कमरा की एक मामूली राशि का शुल्क लेता है।यूनिवर्सिटी में आने वाले आमंत्रित अतिथियों, जो आम तौर पर कुल बुकिंग के 80% -90% होते हैं, मुफ्त आवास उपलब्ध कराए जाते हैं। ई-मेल अनुरोध के माध्यम से आवास की ऑनलाइन बुकिंग सुविधा है साथ ही यूनिवर्सिटी वेबसाइट www.cus.ac.in पर उपलब्ध कराए गए निर्धारित फॉर्म का उपयोग करके भी कमरे बुक किए जा सकते हैं। उपलब्धता के अधीन, बुकिंग की आमतौर पर एक वापसी मेल द्वारा पुष्टि की जाती है ऐसे मामलों को और अधिक कुशल तरीके से रिकॉर्ड रखने के लिए, अतिथि गृह के प्रबंधन ने हाल ही में इस सेवा के लिए समर्पित सॉफ्टवेयर का उपयोग करके अपनी बुकिंग और बिलिंग अनुभाग को स्वचालित कर दिया है।

भोजन कक्ष

अतिथि गृह का प्रबंधन करना शुरुआत से ही एक बड़ी चिंता का विषय रहा है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि अतिथि गृह में उपलब्ध सुविधा और सेवा की गुणवत्ता ने वर्षों से लगातार सुधार दर्ज किया है, फिर भी, इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता है कि अतिथिगृह को और सुधार करने के लिए बहुत कुछ संभावनाएँ बनी हुई हैं। यह हमें कुछ हद तक संतुष्टि देता है कि वीवीआईपी अतिथियों को छोड़कर, विश्वविद्यालय या शहर में आने वाले अधिकांश अतिथियों के लिए आवास अनुरोधों को बुकिंग कार्यक्रम के कुशल प्रबंधन के माध्यम से सफलतापूर्वक संचालित किया जा रहा है। यह कहने की कोई आवश्यकता नहीं है कि विश्वविद्यालय अतिथि गृह होने के कारण, यह आमतौर पर विश्वविद्यालय के निमंत्रण पर आने वाले मेहमानों के लिए उपयोग में आता है। हालांकि, यह जानकारी साझा करने में अतिथि गृह मैनेजमेंट को ख़ुशी है कि इसकी सीमित क्षमता के बावजूद, वह कुछ अन्य अतिथियों को भी समायोजित करने में सक्षम हो पाता है जो विश्वविद्यालय के प्रत्यक्ष आमंत्रित अतिथि नहीं थे, फलस्वरूप अतिथिगृह के राजस्व वृद्धि में योगदान दिया। हाल ही के समय में विश्वविद्यालय के मेहमानों के अलावा अन्य मेहमानों से उत्पन्न राजस्व में काफी वृद्धि इस तथ्य को साबित करती है कि हमारा अतिथि गृह बेहतर सेवा प्रदान करने में सक्षम रहा है और उन मेहमानों को आकर्षित करता है जो भुगतान के आधार पर सुविधा प्राप्त करने के इच्छुक होते हैं।

अतिथि गृह लाउंज

Revenue Generated from Guests other than University Invitees

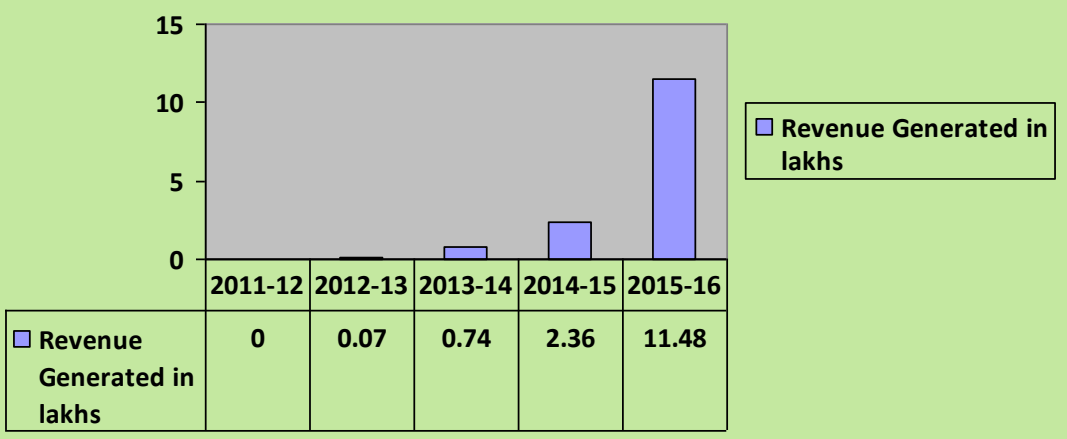

	2011-12	2012-13	2013-14	2014-15	2015-16
Revenue Generated in lakhs	0	0.07	0.74	2.36	11.48

सीबी छेत्री, सहायक कुलसचिव, (प्रशासन) और प्रभारी अतिथि गृह